508 (P)
H (109)
MICRO FILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1389
10/71

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 508

S2 ✓
1911

508

क्रान्ति का सिंहनाद

प्रकाशक
राष्ट्रीय साहित्य प्रचारक मण्डल कानपुर

प्रथमबार २०००

मूल्य -)

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 508
Date 13.12.71
GOVT. OF INDIA

क्रान्ति का सिंहनाद

वन्देमातरम् ।

वन्देमातरम् ! सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम्
शस्य श्यामलाम् मातरम् ।
शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकित यामिनीम्
फुल्ल कुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्,
सुहासिनीम्, सुमधुर भाषिणीम्,
सुखदां, वरदां, मातरम् ॥
त्रिंश कोटि कंठ कलकल निनाद कराले,
द्वित्रिंश कोटि भुजैर्धृत खरकरवाले,
के बोले मां तुमि अबले ।
बहुबल धारिणीम् नमामि तारिणीम्
रिपुदल वारिणीम् मातरम् ॥

राष्ट्रीय-पताका गायन।

विजयी-विश्व तिरंगा प्यारा।
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥

सदा शक्ति बरसाने वाला, प्रेम सुधा सरसाने वाला,
वीरों को हरषाने वाला, मातृभूमि का तन मन सारा।
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥

स्वतंत्रता के भीषण रण में, लखकर बढ़े जोश क्षण २ में,
कांपे शत्रु देख कर मन में, मिट जावे भय संकट सारा।
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥

इस झंडे के नीचे निर्भय, लें स्वराज्य यह अविचल निश्चय,
बोलो भारत माता की जय, स्वतंत्रता हो ध्येय हमारा।
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥

आओ प्यारे वीरो आओ, देश धर्म पर बलि २ जावो,
एक साथ सब मिल कर गावो, प्यारा भारत देश हमारा।
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥

इसकी शान न जाने पाये, चाहे जान भले ही जाये,
विश्व विजय करके दिखलाये, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा।
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा।

891.43
K862K

राष्ट्रीय पताका।

राष्ट्रगगन की दिव्य ज्योति राष्ट्रीय पताका नमो नमो।
भारत जननी के गौरव की अविचल शाका नमो नमो॥
कर में लेकर इसे शूरमा तीस कोटि भारत संतान।
हंसते २ मातृभूमि के चरणों पर होंगे बलिदान॥
हो घोषित निर्भीक विश्व में तरल तिरंगा नवल निशान।
वीर हृदय खिल उठें मारलें भारतीय क्षण में मैदान॥
हो नस नस में व्याप्त चरित शूरमा शिवा का नमो नमो।
राष्ट्र गगन की दिव्य ज्योति राष्ट्रीय पताका नमो नमो॥१
नव युवको स्वातंत्र समर में नव जीवन संचार करो।
शस्त्र अहिंसा से दल कर दासता दुर्ग को क्षार करो॥
शान्तिक्रान्ति युग में हे वीरो जीवन सुमन निसार करो।
ऊंचे स्वर से एक साथ जननी की जय जयकार करो॥
शक्ति देखकर शत्रु शिविर में मचे सनाका नमो नमो।
राष्ट्र गगन की दिव्य ज्योति राष्ट्रीय पताका नमो नमो॥२
उच्च हिमालय की, चोटी पर जाकर इसे उड़ायेंगे।
विश्व विजयनी राष्ट्र पताका का गौरव फहरायेंगे॥
समरांगण में लाल लाड़िले लाखों बलि बलि जायेंगे।
सबसे ऊंची रहे न इसको नीची कभी झुकायेंगे॥
गूंजे स्वर संसार सिंधु में स्वतंत्रता का नमो नमो।
राष्ट्र गगन की दिव्य ज्योति राष्ट्रीय पताका नमो नमो॥३

जब अहले हिन्द अपनी हिम्मत से काम लेंगे।
फिर तो स्वराज्य अपना यह ला कलाम लेंगे॥
इक भाई दूसरे की नज़रों से जो गिरेगा।
आंसू की तरह उसको दामन में थाम लेंगे॥
दो चार पांच दस में काटेंगे बात झूंठी।
तेगे सखुन को जिसदम हम बे नियाम लेंगे॥
कुल मसजिदों में हिन्दू और मन्दिरोंमें मुस्लिम।
ये नाम हक़ जपेंगे, वे नाम राम लेंगे॥
एक आन में मिलेगा हिन्दोस्तान हमको।
हुब्बे वतन का हिस्सा जब खास आम लेंगे॥
जिस वक्त जब मिलेगा, लेलेंगे राज अपना।
गर सुबह ना मिलेगा हम ताब शाम लेंगे॥
आयेगा जब समझ में इन्साफ रहम क्या है।
पंजाब के मज़ालिम, जिस वक्त नाम लेंगे॥
प्यासी है तेग़ क़ातिल, इसको लहू पिला कर।
बेशक अज़ीज़, बेशक कौसर का जाम लेंगे॥
सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है ज़ोर कितना बाज़ुये क़ातिल में है॥

रहबरे राहे मुहब्बत रह न जाना राह में।
लज़्ज़ते सहराना वर्दी दूरिये मंज़िल में है॥
वक्त आने दे बतादेंगे तुझे ऐ आसमा।
हम अभी से क्या बतायें क्या हमारे दिल में है॥
आज मक़तल मेंये क़ातिल कह रहाथा बारबार।
क्या तमन्नाये शहादत भी किसी के दिल में है॥
ऐ शहीदे मुल्को मिल्लत मैं तेरे ऊपर निसार।
अब तेरी हिम्मतका चरचा ग़ैरकी महफ़िल मेंहै॥
अब न अगले वलवलेहैं औ न अरमानोंकी भीड़।
एक मर मिटनेकी हसरत अबदिले "बिस्मिल" में है॥

राष्ट्रीय पुष्प की कामना।

चाह नहीं है सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊं।
चाह नहीं है प्यारी के गलपड़ूं हारमें लगजाऊं॥
चाह नहीं है राजाओं के शब पर मैं डालाजाऊं।
चाह नहीं है देवों के सर चढ़ूं भाग्य पर इतराऊं॥
मुझे तोड़कर हे बनमाली! उस मगमें तू देनाफेंक।
मातृभूमिहित शीशचढ़ाने, जिसपथजावें वीरअनेक॥

सैयाद की क़यामत!

मुर्ग़ दिल मत रो यहां आंसू बहाना है मना।
अन्दलीबों को कफ़स में चहचहाना है मना॥
हाय! जल्लादी तो देखो कह रहा सैय्याद यह।
वक्त ज़िबहा बुलबुलों को फड़फड़ाना है मना॥
वक्त जिबहा जानवर को देते हैं पानी पिला।
हज़रते इंसान को पानी पिलाना है मना॥
मेरे खूं से हाथ रङ्ग कर बोले क्या अच्छा है रंग।
अब हमें तो उम्र भर मेंहदी लगाना है मना॥
ऐ मेरे ज़ख्मे जिगर! नासूर बनना है तो बन।
क्या करूं इस ज़ख्म में मरहम लगाना है मना॥
खूने दिल पीते हैं "असगर" खाते हैं लख्ते जिगर।
इस कफ़स में क़ैदियों को आबोदाना है मना॥

तेरी इस जुल्मकी हस्तीको, ऐ ज़ालिम! मिटादेंगे।
ज़बाँ से जो निकालेंगे, वही करके दिखादेंगे॥
हमारी आह नालों को, तुम बे सूद मत जानो।
जो हम रोने पै आयेंगे, तो दरिया ही बहादेंगे॥
भड़क उट्ठेगी जब, सीनये सोज़ां की यह आतिश।
तो हम इकसर्द आह भरकर, तुझे ज़ालिम जलादेंगे॥
हमारे सामने सख्ती है, क्या? उन जेल ख़ानोंकी।
वतन के वास्ते हम, दार पर चढ़कर दिखादेंगे॥
भगतसिंह व दस्तजैसे, कौमके परवाने हैं ज़िंदांमें।
हम उनके वास्ते सबमाल ज़र अपना लुटादेंगे॥
इसमें भी कुछ राज था, हम मुद्दतसे खामोश बैठे थे।
अब जो करने पै आये हैं, तो कुछ करके दिखादेंगे।।
अगर कुछ भेंट आज़ादी की, देवी हमसे मांगेगी।
रहे किस्मत तो हम अपना सर दार पर चढ़ादेंगे॥
नहीं मंजूर अब इज्जत हमें, सरमाया दारों की।
निशां तेरा मिटादेंगे, तुझे जब बद दुआदेंगे॥

चुन चुन के फूल लेले, अरमान रह न जावे।
ये हिन्द का बगीचा, गुलज़ार रह न जावे ॥
ये वो चमन नहीं है, लेने से होवें ऊजड़।
उलफ़तका जिससे कुछ भी, अहसान रह न जावे ॥ चुन० ॥
करदो ज़बान बंदी, जेलों में चाहे भर दो।
मांता पे होता कोई, क़ुरबान रह न जावे ॥ चुन० ॥
छल औ फरेब से तुम, भारत का माल लूटो।
उसके गुज़र का कोई, सामान रह न जावे ॥
चुन २ के फूल लेलो, अरमान रह न जावे ॥

देश-भक्तों के अरमान।

यदि देश हित मरना पड़े, मुझको सहस्रो बार भी।
तो भी न मैं इस कष्ट को, निज ध्यान में लाऊं कभी ॥
हे ईश ! भारत वर्ष में, सौ बार मेरा जन्म हो।
कारण सदाही मृत्यु, का देशोपकारक कर्म हो ॥

माता से विदा मांगता हूँ ।

मां ! हमें विदा दो, जाते हैं हम विजय केतु फहराने आज ।
तेरी बलिवेदी पर चढ़कर, मां ! निज शीश कटाने आज ॥१॥
नृत्य करेंगे रक्त कुण्ड में, फिर अब रुंड हमारे आज ।
अरु सिर गिर कर यही कहेंगे, भारत भूमि हमारी आज ॥२॥
मलिन वेष ये आंसू कैसे, कम्पित होता है यह अङ्ग ।
वीर प्रसूती क्यों रोती है ? जब लग शक्ति हमारे अङ्ग ॥३॥
धरा शीघ्र ही धसक पड़ेगी, टूट जायेंगे नभ के तार ।
विश्व कांपता रह जावेगा, होगी मां जब रण हुंकार ॥४॥
तेरे चरणों में सर धर कर, जाते हैं करने रण रङ्ग ।
फिर भय किस का है, हे जननी जब आशीष हमारे संग ॥५॥
विजय देवि आकर धोवेगी, तब चरणों को सज नव साज ।
पुलकित होकर हम गावेंगे, भारत भूमि हमारी आज ॥ ६ ॥

ख़ौफ़ आफ़त से नहीं, दिलमें रिया आयेगी।
बात सच्ची है जो, वह लब पै सदा आयेगी॥
आत्मा हूँ मैं बदल डालूंगा फ़ौरन चोला।
क्या बिगड़ेगी अगर मेरी क़ज़ा आयेगी॥
ग़ैर ज़ोम और खुदी में जो करेगा हमला।
मेरी इम्दाद को खुद जाते खुदा आयेगी॥
सामना सब्र शुजाअत से करूंगा मैं भी।
खिंच के मुझ तक जो कभी तेरी ज़फ़ा आयेगी॥
मैं उठालूंगा बड़े शौक़ से सर पर उसको।
ख़िदमते क़ौम में जो रंजो बला आयेगी॥
मर के निकलेगी नहीं दिलसे वतन की उल्फ़त।
मेरी मिट्टी में भी खुशबूये वफ़ा आयेगी॥
अब्र तर अश्क़ बहायेगा मेरे लाशे पर।
ख़ाक उड़ाने के लिये बादे सबा आयेगी॥
खूब रोयेगी बहुत मेरे भी मरने पै शफ़क़।
ग़म मनाने के लिये काली घटा आयेगी।
ज़िन्दगी में तो मेरे मिलने से झिझके हैं फ़लक।
ख़ल्क़ को याद मेरी बादे फ़ना आयेगी॥

लाहौर कांग्रेस के अवसर पर

ज़रा लगन आज़ादी लग गई, ज़िन्दों के तन के बीच।
वह मजनू की नाईं फिरते, हर सहरा हर बनके बीच॥

दिनको चैन क़रार कभी ना रात को भी वहलेते हैं।
निद्रा में भी चौंक चौंक कर उठ उठ कर वे रोते हैं॥
जब चाहे जो देख लो उनको, ये ही ग़ोते लेते हैं।
आज़ादी हासिलहो कैसे इस दिन या इस सन के बीच॥

ज़रा लगन ॥ १

ज्यों परवाने शमा के उन पर, तिड़ २ करके जलते हैं।
आशिक़ भी आज़ादी के क्यों हंस २ फांसी चढ़ते हैं॥
जी चाहे तब देखलो उनको, मौत से वे नहीं डरते हैं।
रख देते हैं अपने सिर को जो मशीन औ गन के बीच॥

ज़रा लगन ॥ २

मुल्ककी ख़ातिर जानदी जिसने, मरा नहीं वह ज़िन्दाहै।
उसकी कुरबानी को लेकर, योरोप भी शरमिंदा है॥
उनकी याद भूलो ना ग़ाफ़िल, कोई हिंदी वाशिंदा है।
उल्फ़त घर बैठी उनकी, हर तन और बदन के बीच॥

ज़रा लगन ॥ ३

दास ने दास देश का बनना दिखलाया सबको खोलके।
देशहित पर जान देदी, कैसे अपनी रोल के॥
शहीदों का सरदार हुआ वह, देखो आखें खोल के।
खिलअत समझ आज़ादी की, वह लिपटा जाय कफ़न के बीच॥
ज़रा लगन है॥ ४

रण-विदा!

माँ! कर विदा आज जाने दे॥
जग में तेरा मान बढ़ाने,
धर्म कर्म का पाठ पढ़ाने,
वेदी पर बलिदान चढ़ाने,
आओ सर से कफ़न बांध कर, रण चढ़ लोह चबाने दे।
माँ! कर बिदा आज जाने दे॥ १

क्यों मां मलिन सुवेष तुम्हारा?
कंपित अंग अंग है सारा,
बहती क्यों आंसू की धारा,
बीरों की जननी जब तक हम, जीवित आंच न आने दे।
माँ! कर बिदा आज जाने दे॥ २

९६
स्वतंत्र

माँ ! न रोक जायें दुख झेलें,
भरदें फिर जेलों पर जेलें,
फांसी के तख्ते पर खेलें,
दांतों उंगली दाबें दुश्मन, जीवित जोश जगाने दे।
माँ ! कर विदा आज जाने दे ॥ ३

धरा धसक भूधर फूटेंगे,
नभ के ये तारे टूटेंगे,
रिपुओं के छक्के छूटेंगे,
होने दे हुंकार हमारी, दुनियां को दहलाने दे।
माँ ! कर बिदा आज जाने दे ॥ ४

तेरा रुधिर गर्व से पीते,
गोरों को माँ वर्षों बीते,
लानत हमें रहें जो जीते,
आंखों से दुर्दशा देखकर, अब भी खंग उठाने दे।
माँ कर बिदा आज जाने दे ॥ ५

दुश्मन
खड्ग

अब गुलाम होकर न रहेंगे,
और न अत्याचार सहेंगे,
खोल २ कर खूब कहेंगे,
मिट जावे सरकार, क्रांति की चिनगारी सुलगाने दे।
माँ ! कर विदा आज जाने दे ॥ ६

द॰ मा॰ ग॰ देवनगर
द॰ नगीनरुखा

खोले खड़े सामने सीने,
बढ़कर रुधिर शत्रु का पीने,
जाते हैं अब मर कर जीने,
पीछे पैर न पड़े शान से, रिपु का मान मिटाने दे।
माँ ! कर विदा आज जाने दे॥ ७

आंखों में फिर जंग रंग है,
मन में मिटने की उमंग है,
माँ ! तेरी आशीष संग है,
नौजवान चुप रहें किस तरह, फिर दो हाथ दिखाने दे।
माँ ! कर विदा आज जाने दे॥ ८

फिर से उथल पुथल मच जावे,
स्वतंत्रता का रण रच जावे,
ज़ोर ज़ालिमों का लचजावे,
बहे ख़ून की धार हर तरफ़, हंस हंस शीश कटाने दे।
माँ ! कर विदा आज जाने दे॥ ९

माँ ! फिर तेरे सब दुःख खोवें,
रिद्धि सिद्धि पद पंकज धोवें,
सुर समूह निछावर होवें,
प्यारी भारत भूमि हमारी, हम भारत के गाने दे।
माँ कर विदा आज जाने दे॥१०

चमन है गुल के लिये, और गुल चमन के लिये ।
वतन है मेरे लिये, और मैं वतन के लिये ॥
हम अहले इश्क़ हैं मज़हब से वास्ता क्या है ।
यह तज़किरा है शेख़ और बरहमन के लिये ॥
जुनू के ज़ोर में टुकड़े किये हैं दामन के ।
अब एक तार भी बाक़ी नहीं कफ़न के लिये ॥

❁ दोहा ❁

कोटिन मधि कोऊ कहूँ, कुल दीपक इक होत ।
नेह सहित निज शीश दै, दश दिश करत उदोत ॥
देत अजा बलि देव को, अरे अधर्मी आज ।
धन्य २ जिन शीश निज, दियो देश के काज ॥

—:o:—

आयाहूं मिलने के लिये मिल लो बन्देमातरम् ।
याद में मेरी हमेशा जपना बन्देमातरम् ॥
जब शहीदे क़ौम का निकले जनाज़ा राह से ।
राहगीरो तुम लगाना नारा बन्देमातरम् ॥
खाल खींचे जिस्म की या वे चढ़ायें दार पर ।
मुख से जो मंज़ूर निकले कलमा बन्देमातरम् ॥
ख़ाक से मेरी उगेंगे जो शजर फिर बाद में ।
हर वर्ग पै उसमें लिक्खा होगा बन्देमातरम् ॥
जब से बच्चा गर्भ में हो देश भक्ती तुम सिखाव ।
तो ज़बां से शब्द निकले पहिला बन्देमातरम् ॥
राम रूपी ज्यों करे टुकड़े त्रिपक्षी चाप के ।
त्योंहीं तड़प कर घोष होगा शब्द बन्देमातरम् ॥

वन्देमातरम् !

तब्दील गवर्नमेंट की रफ़्तार न होगी।
गर क़ौम असहयोग पै तैय्यार न होगी॥
हर शहर में बन आयेंगे जलियान वाले बाग़।
इस मुल्क से गर दूर ये सरकार न होगी॥
जब तक कि इसे खून से सींचेंगे नहीं हम।
खेती वतन की दोस्तो गुलज़ार न होगी॥
सौदाई हैं हम, हमको दो लोहे की बेड़ियां।
सोने के ज़ेवरों में, यह झनकार न होगी॥
आपस में मिल गये हैं ये हिन्दुओ मुसलिम।
अब बस तमीज़ तसबीये जुन्नार न होगी॥
दुश्मन को असहयोग से हम ज़ेर करेंगे॥
इन हाथों में बन्दूक़ औ तलवार न होगी।
हम ऐसी हुकूमत को मिटा देंगे "मुज़तरिब"।
ग़म में जो हमारे कभी ग़मख़्वार न होगी॥

शेर-

क्या ही लज़्ज़त है कि रग रग से ये आती है सदा।
दम में तलवार जब तक दम तने "बिस्मिल" में हैं॥

खिदमते हिंदोस्तां पर बिजलियां टूटा करें।
हैफ़ फिर भी जूं नहीं रेंगे तुम्हारे कान पर॥
चहचहाना भूल जावेगी, चमन ख़तरे में है।
बुलबुलो? क्या देखतीं हो खेल जाओ जान पर॥
सफ़रे आज़ादी की राहों का पता चल जायेगा।
गर नज़र डालो ज़रा तुम चीन औ जापान पर॥
हिन्दिओं की बेबसी का उनको लग जाता पता।
हिंद वाले हुक्मरां होते जो हिंदुस्तान पर॥
भूल जायेगा फ़लक़ सारी सितम आराइयां।
डालता है हाथ अर्जुन भीम की संतान पर॥
मुल्क की ख़िदमत बजा लाना "मुसाफ़िर" फ़र्ज़ है।
रंज औ ग़म तो सदा ही आते हैं इन्सान पर॥

———

बस, उठ बैठो!

मांगती है माता बलिदान, जवानो उठो देश की जान।

खो चुके बहुत खो चुके वीर, देखते हुये देश की पीर।
क्यों नहीं उठते अधिक अधीर, ग़ुलामी की तोड़ो ज़ंजीर॥
क्रांति का करो आज आह्वान्।
जवानो उठो देश की जान॥ मांगती है॥ १

देशहित बाधा विघ्न ढकेल, बढ़ो फिर बढ़कर भरदो जेल।
सदा ही समझो मरना खेल, चढ़ो फांसी पर संकट झेल॥
ज़ोश से गावो गौरव गान,
जवानो उठो देश की जान॥ मांगती है॥ २

मर रहे हैं कुत्तों से लोग, फैलते जाते भीषण रोग।
भोगते श्रमजीवी दुख भोग चल रहे हैं झूठे अभियोग॥
मिट रहा प्यारा हिंदुस्तान।
जवानो उठो देश की जान॥ मांगती है॥ ३

देखलो ये ज़ालिम सरकार, कर रही कठिन वार पर वार।
सुनो तो तुम्हें रही ललकार, चुनौती करलो अब स्वीकार॥
हथेली पर रखलो फिर प्रान।
जवानो उठो देश की जान॥ मांगती है॥ ४

बांधलो सर से कफ़न संवारे, उठो फिर ऐ माई के लाल।
मर मिटो छोड़ो सारे ख्याल, न नीचा हो भारत का भाल॥
तुम्ही तो हो उसके अरमान।
जवानो उठो देश की जान॥ मांगती है०॥ ५
चलो वीरो अब ठानो टान, देश पर हो जाओ कुरबान।
मचाओ फिर ऐसा घमसान, विरोधी लेकर भागें प्रान॥
हाथ में ले लो लाल निशान।
जवानो उठोदेश की जान॥ मांगती है०॥ ६

हैं हम वीरों की सन्तान॥
दुनियां की आंखों का तारा,
भारत देश हमारा प्यारा,
हमने उसपर सब कुछ वारा,
तन मन और अतुल धन धाम। हैं हम०॥ १
हमें स्वर्ग की चाह नहीं है,
सुखदुख की परवाह नहींहै,
मर मिटने में आह नहीं है,
करना है स्वदेश उत्थान। हैं हम वीरों०॥ २

प्यारे वीरो बढ़ कर आओ,
देर करो मत कढ़कर आओ,
मरण मंत्र फिर पढ़कर आओ,
हंसकर हो आओ बलिदान । हैं हम वीरों० ॥ ३

फिर से बहें रक्त की धारें,
रिपुओं के दल हिम्मत हारें,
भागें अस्त्र शस्त्र सब डारें,
छिपते फिरें लिये निज प्रान । हैं हम वीरों० ॥ ४

नौजवान अब और न भूलें,
बढ़ें सजग मरने को फूलें,
फांसी के तख्ते पर झूलें,
गाते हुए क्रांति के गान । हैं हम वीरों० ॥ ५

आज़ादी के वीर सिपाही,
करें देश की दूर तबाही,
चलें मिटादे नौकर शाही,
बढ़दें विजय करें बलिदान । हैं हम वीरों० ॥ ६

❀ दोहा ❀

जो जन लोभी शीश के, ते अति दीन अधीन ।
शीश चढ़ाये बिनु भयो, कहौ कौन स्वाधीन ॥
एक ओर स्वाधीनता, शीश दूसरी ओर ।
जो दो में भावे तुम्हें, सो भरि लेउ अँकोर ॥
कोटिन यतन करौ चहैं, रचि पचि लाख बरीष ।
मिली न कहुं स्वाधीनता, बिनु सौंपे निज शीश ॥
चाहो जो स्वाधीनता, सुनो बचन मन लाय ।
बलि बेदी पै निज करन, निज शिर देउ चढ़ाय ॥
दियो दान निज शीश को, बहु नते वृत वीर ।
मुंह लगाय केते कहो, पियत सिंहनी क्षीर ॥
कोटिन मधि कोऊ कहूं कुल दीपक इक होत ।
नेह सहित निज शीश दै, दस दिशि करत उदोत ॥
सौंप्यो स्वामहिं कोउ जन, कोउ धन हय गजठौर ।
पै वह सहजै सौंपि सिर, भयो सबन सिरमौर ॥
देत अजाबलि देव को अरे अधर्मी आज ।
धन्य २ जिन शीश निज, दियो देश के काज ॥

अहाहा! मोहन के मुँह से निकला,
स्वतंत्र भारत स्वतंत्र भारत ।
सचेत होकर सुना सभी ने,
स्वतंत्र भारत स्वतंत्र भारत ॥
बनाके कुटिया स्वतन्त्रता की,
सपूत जेलों में रम रहे हैं ।
निकल के देखेंगे वे तपस्वी,
स्वतंत्र भारत स्वतंत्र भारत ॥
कुमारी हिमगिर अटक कटक में,
बजेगा डंका स्वतंत्रता का ।
कहेंगे तैंतीस करोड़ मिल कर,
स्वतंत्र भारत स्वतंत्र भारत ॥

—

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No ......
Date
GOVT. OF INDIA